एड्स एक महामारी

रेणू पुत्री श्री शोभाराम
प्रधान शोध सहायक

एड्स की शुरूआत अफ्रीका से हुई थी जिसकी जानकारी 1970 में वैज्ञानिक श्री एलेक्जेण्डर टेम्पलटन को मिली । जून 1981 में इस रोग की विस्तार से चर्चा की गई । एड्स रोग का सबसे पहले पता अमेरिका में चला था। जब अस्सी के दशक के प्रारम्भिक वर्षो में अमेरिका के लॉस एंजिल्स, न्यूयार्क सैनफ्रांसिस्कों जैसे शहरों में हजारों नवयुवक एक भयानक रहस्मय बीमारी से पीड़ित होने लगे थे ।

अमेरिका में अप्रैल 1985 तक उन्नीस हजार से अधिक एड्स रोगियों की पहचान हो चुकी थी । जिनमें 4715 लोग तो मौत के मुँह में भी जा चुके थे । अमेरिका के अतिरिक्त एड्स रोग का प्रसार यूरोप के देशों में भी हुआ ।

भारत में एड्स रोग की सर्वप्रथम पुष्टि 27 मई 1986 को मुम्बई के जसलोक अस्पताल में भर्ती एक रोगी के शरीर में हुई थी । उस रोगी की मृत्यु एड्स के ही कारण 9 जून 1986 को हो गयी थी । यह रोगी एक 55 वर्षीय व्यापारी था जिसे 1980 में अमेरिका के न्यूयार्क अस्पताल में ह्दय की शल्य चिकित्सा के दौरान रक्त की कुछ बोतलें चढ़ाई गई थी । सितम्बर 1983 में ही रोगी के शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति के नष्ट होते चले जाने के कारण उसे फंफूदी सक्रमण के साथ हल्का ज्वर रहने लगा था और वजन तेजी से घटने लगा था । 1986 में उस रोगी के रक्त की विस्तार से जाँच की गई और एड्स वायरस के मौजूद होने का पता चला । सितम्बर 1986 में विश्व आरोग्य संस्थान के द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार उस समय एशिया के 12 देशों में एड्स के मात्र 57, अफ्रिका के 15 देशों में 1008 , यूरोप के 27 देशों में 3127 और उत्तरी व दक्षिणी अफ्रिका के 44 देशों में 27166 एड्स के रोगी थे किन्तु अब जो रिपोर्ट इन देशों से आ रही है वह रोंगटे खड़े कर देने वाली है । अकेले अमेरिका में ही ऐसे कई लाख एड्स रोगी हैं जो आगामी 1-2 वर्षो में मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे।

आज अकेले भारत में ही 40 से 50 लाख लोग एड्स विषाणु से संक्रमित हो चुके हैं । जिनमें 50 हजार से लेकर एक लाख के लगभग तो ऐसे लोग हैं, जिनमें एड्स रोग के लक्षण विकसित होने लगे हैं ।

भारत में एड्स विषाणुओं से संक्रमित सर्वाधिक रोगी महाराष्ट्र में हैं और उनमें भी मुम्बई में एड्स के सबसे अधिक रोगी हैं । मध्यप्रदेश में भी अब तक एड्स के कारण 21 मौते हो चुकी हैं और 65 से अधिक रोगी अभी भी विभिन्न अस्तपतालों में भर्ती होकर मौत से जूझ रहे हैं ।

क्या है एड्स?

एड्स का पूरा नाम एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिशिएंसी सिण्ड्रोम है । एड्स का विषाणु Retrovirus प्रकार का होता है । सन् 1984 में लिम्फैडेंनोपैथी एसोसिएटिक वायरस (LAV) के नाम से इस विषाणु को पुकारा गया ।

दोबारा अध्यन्न के दौरा इस विषाणु को एक अन्य नाम Human T Lymphotropic Virustype –III यानि HTLV-III से पुकारा गया परन्तु अब इस वायरस को Human Immuno deficiency Virus HIV के नाम से जाना जाता है । HIV का अर्थ होता है human Immuno deficiency Virus यानि प्रतिरोधक क्षमता का पूर्णतः नष्ट हो जाना ।

एड्स एक Sexually transmitted disease एच.आई.वी. वायरस को सर्वप्रथम Dr. Montangnier ने Homo Sexual पुरूषों के Lymph nods से अलग किया था और इसको LAV लिम्फोएडी नोपेथी वाइरस नाम दिया था ।

एच.आई.वी. वायरस एवं उसकी क्रियाशीलता

एच.आई.वी. वायरस अत्यन्त सूक्ष्म प्रवृति के होते हैं । एच.आई.वी. वायरस गोल, आवरणयुक्त होता है । इसका व्यास लगभग 90-120 एन.एम. होता है , इसका जीनोम एक सूत्री आर.एन.ए. अणु के रूप में होता है, जो दो समान टुकड़ो में विभाजित होता है । वायरस का आवरण द्विस्तरीय प्रोटीन का बना होता है । इसमें Spike like Knobs निकले रहते हैं ये Knobs glycoproteins से बने होते हैं ।

हमारे शरीर में मुख्य दो तरह की कोशिकाएं पायी जाती हैं । (1)T- lymphocyt cells (2) B-lymphocyt cells HIV virus मुख्य रूप से T-lymhocyt cells को अपना शिकार बनाते हैं । T-lymhocyt cells की बाहरी दीवार पर कुछ विशेष प्रकार के अणु व्यवस्थित रहते हैं । जिन्हें ग्राही अणु कहते हैं । `इनके जरिए T-lymphocyt cells

को बाहर की सारी खबर रहती है । ग्राही अणु T-lymphocyt cells HIV Virus पर लगा ऐसा ताला है जिसमें सही चाबी लगा कर ही सैल्स के अन्दर घुसा जा सकता है ।

T-lymphocyt cells पर ये ग्राही अणु दो प्रकार के होते हैं CD-4 और CD-26 । एड्स वायरस की सतह पर GP-120 नामक अणु पाये जाते हैं Gp-120 अणु T_4 सैल की CD-4 अणु से संयुक्त होकर एक CD-26 enzyme बनाते हैं जो एक V_3 - लूप का निर्माण करता है अब एच.आई.वी. वायरस आसानी से T_4 सैल्स में घुस जाता है यहाँ यह तेजी से गुणन करता है यहाँ से स्वतंत्र होने के बाद यह नयी T_4 सैल को संक्रमित करता है जिससे WBC की संख्या में तेजी से गिरावट आती है जिसके कारण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पूर्णमः नष्ट हो जाती है तथा रोगी विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो जाता है ।

एड्स से संक्रमित होने के लगभग पांच वर्ष बाद तक व्यक्तियों में एड्स के कोई भी लक्षण विकसित नहीं होते हैं । इस अवस्था में ये अपनी संख्या में वृद्धि करते हैं । संक्रमित व्यक्तियों में थकावट , ज्वर अतिसार, सिरदर्द, खाँसी , कमजोरी, भूख न लगना आदि लक्षण विकसित हो जाते हैं । कुछ समय बाद त्वचा तथा गुप्तांगों पर दाने निकल आते हैं । कुछ व्यक्तियों में जांघों पर गांठे बन जाती हैं । बाद में रोगी की त्वचा पर गुलाबी या बैंगनी तथा बाह्य जननांगों पर सफेद चकते दिखाई देने लगते हैं । अन्त में व्यक्ति न्यूमोनिया व कैंसर आदि रोगों से पीड़ित होकर मर जाता हे । अभी तक एड्स रोग के उपचार हेतु कोई प्रभावशाली औषधि नहीं बन पाई है । आजकल जाइडोवूडाइन (Zydovudine-AZT) नामक पदार्थ पर परीक्षण चल रहे हैं कुछ होमियोपैथिक डॉक्टर भी इसका दावा करते हैं ।

कैसे फैलता है एड्स

1. संदूषित सिरिंज के प्रयोग द्वारा
2. संक्रमित व्यक्ति के साथ शारीरिक संबंध से
3. रूधिक आद्यान द्वारा
4. वीर्यसेचन द्वारा
5. प्रसूत के समय माता से शिशु को
6. अंग प्रतिरोपण द्वारा ।

एड्स से बचाव

1. लोगों को एड्स के घातक परिणामों की सूचना देनी चाहिए ।

2. इन्जैक्शन लगने वाली सीरिंज को एक बार प्रयोग करने के बाद फैंक देना चाहिए ।
3. रूधिर देने वाले व्यक्तियों , प्रतिरोपण के लिए अंगो का निरीक्षण अनिवार्य रूप से होना चाहिए ।

भारत में एड्स

भारत में एड्स का पता सबसे पहले 1986 में लगा था । उसके बाद देश में इस ध्यान रखने के लिए 42 केन्द्रों की स्थापना की । इन केन्द्रों ने 42000 सम्भावित रोगियों का पता लगाया है । (आई.सी.एम.आर) इंडियन कॉसिल ऑफ मैडिकल रिसर्च ने 1985-86 में निम्न केन्द्रों में शोध दल बनाये हैं ।

1. इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ वाइरोलोजी , पूणा ।
2. सैन्टर फॉर एडवान्स रिसर्च इन वाइरोलोजी वैल्लौर ।
3. ऑल इंडिया इंस्टीटयूट ऑफ मैडिकल साईंस नई दिल्ली ।
4. नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ कम्यूनिकेबल डिसेज, नई दिल्ली ।

रूधिर दान करने वाले व्यक्तियों व रूधिर बैंक तथा अस्पताओं में इन्जैक्शन देने के लिए एक बार ही सिंरिज का उपयोग करने पर कोई नियंत्रण न होने के कारण भारत में तेजी से इस रोग के फैलने की सम्भावना है । उपलब्ध आंकड़ो के अनुसार एड्स से पीड़ित रोगियों में से 75 प्रतिशत एक ही लिंग के व्यक्तियों के बीच लैंगिक संबंध या एक से अधिक पुरूष या स्त्रियों से सहवास करने वाले, 17 प्रतिशत अंताशिरा इन्फैक्शन द्वारा नशीले पदार्थ लेने वाले , 2 प्रतिशत रूधिर आधान वाले तथा शेष 6 प्रतिशत अन्य कारणवश होते हैं । एड्स को रोकने के लिए सरकार को महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब आधे से ज्यादा भारत एड्स रोग से पीड़ित होगा ।

IIIII